जीन पियाजे (Jean Piaget) का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत मनोविज्ञान के सबसे प्रभावशाली सिद्धांतों में से एक है। पियाजे का मानना था कि बच्चे केवल जानकारी को इकट्ठा नहीं करते, बल्कि वे अपने अनुभवों के आधार पर सक्रिय रूप से दुनिया की अपनी समझ का निर्माण करते हैं।
पियाजे ने इस विकास को **चार मुख्य अवस्थाओं (Stages)** में विभाजित किया है:

---

# 1. संवेदी-पेशीय अवस्था (Sensorimotor Stage)

**अवधि:** जन्म से 2 वर्ष तक इस अवस्था में बच्चा अपनी इंद्रियों (देखना, सुनना, छूना) और शारीरिक गतिविधियों के माध्यम से दुनिया को समझता है।

- **वस्तु स्थायित्व (Object Permanence):** यह इस चरण की सबसे बड़ी उपलब्धि है। लगभग 8-9 महीने की उम्र में बच्चा समझने लगता है कि वस्तुएं तब भी मौजूद रहती हैं जब वे दिखाई नहीं देतीं।
- **प्रतिवर्ती क्रियाएं (Reflex Action):** शुरुआत में बच्चा केवल प्राकृतिक क्रियाएं (जैसे चूसना या पकड़ना) करता है।

---

# 2. पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था (Pre-operational Stage)

**अवधि:** 2 से 7 वर्ष तक इस चरण में बच्चा भाषा और प्रतीकों का उपयोग करना सीखता है, लेकिन वह अभी भी तार्किक रूप से सोचने में असमर्थ होता है।

- **अहंकारिता (Egocentrism):** बच्चा केवल अपने नजरिए से सोचता है। उसे लगता है कि जैसा वह महसूस कर रहा है, पूरी दुनिया वैसा ही महसूस कर रही है।
- **जीववाद (Animism):** बच्चे को लगता है कि निर्जीव वस्तुओं (जैसे गुड़िया या बादलों) में भी भावनाएं और जान होती है।
- **केंद्रीकरण (Centration):** बच्चा किसी स्थिति के केवल एक ही पहलू पर ध्यान केंद्रित कर पाता है।

---

# 3. मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (Concrete Operational Stage)

**अवधि:** 7 से 11 वर्ष तक इस अवस्था में बच्चा ठोस (Concrete) वस्तुओं और घटनाओं के बारे में तार्किक रूप से सोचना शुरू कर देता है।

- **संरक्षण (Conservation):** बच्चा समझ जाता है कि यदि किसी वस्तु का आकार बदल दिया जाए, तब भी उसकी मात्रा, आयतन या वजन समान रहता है।
- **वर्गीकरण (Classification):** बच्चा वस्तुओं को उनकी विशेषताओं (जैसे रंग, आकार) के आधार पर समूहों में बांटना सीख जाता है।
- **उत्क्रमणीयता (Reversibility):** वह समझने लगता है कि चीजों को उनके मूल रूप में वापस बदला जा सकता है (जैसे बर्फ से पानी और पानी से फिर बर्फ)।

---

## 4. औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (Formal Operational Stage)

**अवधि:** 11 वर्ष से वयस्कता तक यह विकास का अंतिम चरण है जहाँ किशोर अमूर्त (Abstract) और काल्पनिक रूप से सोचना शुरू करते हैं।

- **अमूर्त चिंतन (Abstract Thinking):** अब बच्चे को सोचने के लिए ठोस वस्तुओं की जरूरत नहीं होती। वे "न्याय", "स्वतंत्रता" और "भविष्य" जैसे विषयों पर विचार कर सकते हैं।
- **परिकल्पनात्मक तर्क (Hypothetical Reasoning):** वे "अगर-मगर" वाली स्थितियों पर विचार कर सकते हैं और वैज्ञानिक तरीके से समस्याओं का समाधान ढूंढ सकते हैं।

---

## पियाजे के सिद्धांत की कुछ महत्वपूर्ण अवधारणाएं (Key Concepts)

1. **स्कीमा (Schema):** सूचनाओं का वह मानसिक ढांचा जो हमें दुनिया को समझने में मदद करता है। इसे आप दिमाग के "फोल्डर्स" कह सकते हैं।
2. **आत्मसातीकरण (Assimilation):** नई जानकारी को अपने पुराने स्कीमा में फिट करना (जैसे- सभी उड़ने वाली चीजों को 'चिड़िया' कहना)।
3. **समायोजन (Accommodation):** नई जानकारी के आधार पर पुराने स्कीमा को बदलना (जैसे- यह समझना कि 'हवाई जहाज' चिड़िया नहीं है)।
4. **साम्यीकरण (Equilibration):** नई और पुरानी जानकारी के बीच संतुलन बनाना।

---

**निष्कर्ष:** पियाजे का सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि जैसे-जैसे बच्चे की उम्र बढ़ती है और उसका जैविक परिपक्वता (Biological Maturation) आती है, उसके सोचने का तरीका गुणात्मक रूप से बदलता जाता है।